स्वतन्त्रता के वर्ष 60

आगामी अगस्त को पूरा देश स्वतन्त्रता दिवस को धूमधाम से 15 वर्षों से लगातार हो 60 मनाने की रस्म अदा करेगा। यह रस्म अदायगी पिछले 60 रही है। इनवर्षों में और कुछ हुआ हो अथवा नहीं लेकिन यह सत्य है कि ये पर्व आम नागरिक के अन्दर स्वतःस्फूर्त भावना पैदा नहीं कर पाये। इन वर्षों में हमने कितनी प्रगति की है, इससे अधिक चिन्ताजनक यह है कि इस अवधि में भारत का चारित्रिक पतन अवश्य हुआ है। राष्ट्र के प्रति समर्पण और भक्ति की भावना अब बीती सदी की कहानी बन चुकी है। व्यक्ति अधिकाधिक स्वार्थी एवं पदलोलुप हो चुका है। देश का राजनीतिक नेतृत्व अपनी सत्ता को बनाये रखने का 'येनप्रकारेण-केन-' प्रयास कर रहा है। 60वर्षों की अवधि किसी भी राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये कम नहीं कही जा सकती। भारत की स्वतन्त्रता के साथ कई अन्य देश स्वतंत्र हुए। सन् में द्वितीय विश्व यु 1945द्ध में तबाह हो चुके जापान ने इस दौरान विश्व की एक महाशक्ति बनने में सफलता प्राप्त की। चीन विश्व की एक महाशक्ति बनने को अग्रसर है। लेकिन सम्पूर्ण विश्व को अपनी आध्यात्मिक एवं भौतिक उपलब्धियों से कभी आकर्षित करने वाला भारत आज भी विकास की प्रक्रिया में हाथपैर मार रहा है। यही नहीं-, जिस प्रकार की गम्भीर चुनौतियाँ इन 60वर्षों के दौरान उभरी हैं उससे राष्ट्र की सम्प्रभुता ही दाँव पर लगी दिखाई दे रही है। स्वतन्त्रता की पूर्व संध्या पर इस प्राचीनतम राष्ट्र ने सन् में 1947 विभाजन की त्रासदी को झेला। मुस्लिम बहुल क्षेत्र इस राष्ट्र से अलग होकर पूर्वी) पाकिस्तानवर्तमान में बांग्लादेश(तथा पश्चिम पाकिस्तान)वर्तमान में पाकिस्तान(के रूप में दो इस्लामी राष्ट्र बनकर लगातार भारत को ही चुनौती दे रहे हैं। विभाजन की त्रासदी के बाद भी भारत की मुस्लिम समस्या का समाधान नहीं हो पाया। अदूरदर्शी राजनीतिक नेतृत्व आज भी इस समस्या को समझ नहीं पा रहा है। पूरा देश एक बार पुनः इस्लामी आतंकवाद की चपेट में है। देश के

विभिन्न महानगरों एवं प्रमुख स्थलों पर हुए सिलसिलेवार बम विस्फोट, श्री अमरनाथ तीर्थस्थल बोर्ड को श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये दी गई जमीन को वापस लेना, विभाजन के लिये जिम्मेदार मजहबी आरक्षण की वकालत, मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा तोडे गये धर्मस्थल अब तक हिन्दुओं को वापस न मिलना, गो-हत्याको सरकारी संरक्षण प्राप्त होना आदि न जाने ऐसी कितनी अनगिनत घटनाएँ हैं जो लगातार राष्ट्रीय स्वाभिमान को स्वतंत्र भारत में चुनौती दे रही हैं एवं राष्ट्रीय सम्प्रभुता के सम्मुख प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रही हैं। जहाँ चर्च द्वारा सेवा और शिक्षा के नाम पर पूर्वोत्तर भारत, देश के वनवासीजनजातीय क्षेत्रों में किये / गये व्यापक पैमाने पर धर्मान्तरण की घटनाएँ लगातार अलगाववादी गतिविधियों को बढ़ाने में सहायक बनी हैं, वहीं साम्यवादी आन्दोलन के नाम पर नक्सली हिंसा के कारण लगभग आधा भारत उग्रवाद की चपेट में है। पाकिस्तान जो अपने आन्तरिक कारणों से ही अपने अस्तित्व के लिये जूझ रहा है, जिसकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह कंगाल हो चुकी है, वह आज अपनी खुफिया एजेन्सी द्वारा मादक द्रव्यों, विस्फोटकों तथा जाली करेन्सी के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने तथा नौजवानों को पथभ्रष्ट करने की महत्त्वाकांक्षी योजना पर लगातार कार्य कर रहा है। जिस पाकिस्तान की पूरी व्यवस्था खोखली हो चुकी है उसकी इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह ऐसा कुछ कर सके लेकिन इस देश की विभाजनकारी राजनीति ने हिन्दुओं को जातीय, भाषायी तथा क्षेत्रीय आधार पर विभाजित करने में कोई संकोच नहीं किया। वहीं अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की राजनीति ने आतंकवादियों को भी धर्मनिरपेक्षता का पर्याय बनाकर पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आईके नाम पर पूरे देश में भय और आतंक का माहौल .आई.एस. खड़ा कर दिया है। राष्ट्र की सम्प्रभुता की रक्षा बिना राष्ट्रीयता की भावना एवं समर्पण के सम्भव नहीं है। इस देश की शिक्षा और राजनीति ने प्रत्येक व्यक्ति को अधिकाधिक स्वार्थी एवं पदलोलुप बना दिया है। प्रबल स्वार्थ के चलते उसे राष्ट्रमाता के चीरहरण में कतई संकोच अथवा शर्म महसूस नहीं हो रही है। -

कदाचित् यही कारण है कि डुमरियागंज कस्बाजनपद सिद्धार्थनगर के भारतीय स्टेट बैंक की शाखा के चेस्ट करेन्सी में सवा करोड़ जाली करेन्सी की बरामदगी इस सम्पूर्ण प्रकरण में बैंककर्मियों की मिलीभगत के साथ ही साथ तमाम प्रश्न खड़े करती है। यह बहुत बड़ा षड्यन्त्र है इस राष्ट्र और उसकी सनातन परम्परा के विरुद्ध जिसकी तुलना मात्र राष्ट्रद्रोह से ही की जा सकती है। समय रहते हम इन षड्यन्त्रों को समझें, चीरहरण की वर्तमान घटनाओं पर मौन न रहें-, तभी राष्ट्र की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखा जा सकता है।